आपने लिखा

संदर्भ अंक 93 में प्रकाशित रेखा चमोली जी का लेख 'नन्ही तितली को उड़ना कौन सिखाता है?' शिक्षा विज्ञान की दृष्टि से चाइल्ड सेंटर्ड गतिविधि का सुन्दर उदाहरण है। पर्यावरण अध्ययन का इससे बेहतर उदाहरण हो ही नहीं सकता जहाँ एक तितली का जीवन चक्र किताबों के पन्नों से निकलकर घर और हाथ पर आ गया हो। इस प्रयास के लिए रेखाजी और बच्चे, दोनों बधाई के हकदार हैं। रेखाजी और बच्चों के अवलोकन इतने सटीक हैं कि लगता है कि ये सवाल-जवाब कहीं किसी कीट वैज्ञानिक के तो नहीं!!

दोनों तितलियों को लेकर उनके अवलोकनों एवं लेख में छपे फोटो के आधार पर मैं रेखाजी के कुछ सवालों के जवाब देने की कोशिश करता हूँ।

1. ये दोनों अलग प्रजाति की तितलियाँ नहीं हैं।
2. दरअसल बाद वाली बड़ी पीले रंग की ही तितली है।
3. और पहले डिब्बे में बैठा कीट पतंगा है।
4. यह अवलोकन भी काफी सटीक है कि बाद वाली तितली प्यूपा से दिन में बाहर निकली।
5. सामान्यतः पतंगे शाम को प्यूपा से बाहर निकलते हैं।

कुल मिलाकर यह लेख शिक्षा और विज्ञान के सिद्धान्तों के साथ इतना घुल-मिल गया है कि समझ में नहीं आ रहा कि यह शिक्षक एवं बच्चों का एक सामान्य लेख है या लार्वा एवं उसके व्यवहार पर एक शोध पत्र।

किशोर पंवार,
होल्कर साइंस कॉलेज,
बीज तकनीकी विभाग, विभागाध्यक्ष,
इन्दौर, म.प्र.

संदर्भ अंक 92 में प्रकाशित लेख 'क्या चुम्बक की शक्ति खर्च भी होती जाती है?' पढ़ा। यह लेख निश्चित ही एक महत्वपूर्ण प्रश्न रखता है और इसकी विवेचना भी सुलझी हुई है। इसका निष्कर्ष '*परन्तु दरअसल लोहे, कोबाल्ट, निकिल या मिश्र धातुओं से बने स्थाई चुम्बक से किन्हीं लौह पदार्थों को चुम्बकित करने से चुम्बक की शक्ति में ह्रास नहीं होता*' विचारणीय है कि जिस चुम्बक ने किसी लौह पदार्थ को चुम्बकित किया, तब क्या उसने कोई कार्य किया? यदि किया तब वह ऊर्जा कहाँ से आई? स्पष्टतया चुम्बकित करने वाले चुम्बक से आई - तो उसकी शक्ति में ह्रास तो होगा ही।

विलम्ब से टिप्पणी के लिए क्षमा ही माँग सकता हूँ।

विश्वमोहन तिवारी
एयर वाइस मार्शल,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

शैक्षणिक संदर्भ अंक 94 मिला। इस अंक में कई लेख संग्रहणीय और पठनीय

लगे। कीर्ति जयराम लिखित आलेख 'क्या समझ से पढ़ना बच्चों को सिखाया जा सकता है?' अर्थ के साथ समझकर पढ़ने के लिए एक बेहतर कौशल के रूप में शिक्षक और बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। बच्चों के लिए इस दृष्टि से कि समझकर अर्थपूर्ण मतलब जान पाना और शिक्षकों के लिए इस उद्देश्य से कि पढ़कर मायने समझते हुए अन्यों को वैसा ही समझा पाना। अखबार पढ़ना, साहित्य पढ़ना, मेल पढ़ना, फेसबुक पर चेट करना, न्यूज़ चैनल का समाचार पढ़ना और चित्र पठन में कई बारीक अन्तर हैं जिनकी हर जगह अपनी उपयोगिता है। इस बार, पढ़ने से पहले की रणनीतियाँः पाठ संरचना पर नज़र डालना, अपने पूर्व ज्ञान को सक्रिय करना, अन्दाज़ा लगाना, सवाल पूछना; पढ़ते समय की रणनीतियाँः शब्दों की बुनावट और अर्थ, अन्दाज़ा लगाना और उसकी पुष्टि, कल्पना करना, आगे बढ़ना-पढ़ते रहना-पीछे लौटना, लिखित सामग्री से पूर्वज्ञान का जुड़ाव, लेख में छुपे निष्कर्ष; और पढ़ने के बादः अपने शब्दों में सुनाना, सार-संकलन करना, ग्राफिक ऑर्गेनाइज़र, निष्कर्ष निकालना, दोबारा पढ़ना आदि सभी बातें जिनका इस आलेख में उल्लेख किया गया है उनसे ऐसा लगता है कि आज की स्थिति में कई ऐसे बच्चे हैं कि जब कौशल की बात करें तो उनका लर्निंग स्तर कुछ और ही दिखता है। इस दिशा में कीर्ति जयरामजी का यह आलेख सभी शिक्षक साथियों के लिए काफी लाभकारी साबित होगा। कुछ महीने पहले ही शिक्षकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ है और अब एक दिन की अकादमिक चर्चा के लिए इस तरह के आलेख की काफी अहमियत है। 'संदर्भ' के सम्पादन समूह को बधाई।

नरेन्द्र साहू,
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
धमतरी, छत्तीसगढ़

भूल सुधार

अंक 94 में लेख 'जेम्स बॉण्ड की दौड़ और स्नेल्स लॉ' *के पृष्ठ 15 पर प्रकाशित चित्र-2 में बिन्दु A और बिन्दु B के बीच में बिन्दु B' है जो भूलवश छप नहीं पाया। इसी लेख के पृष्ठ 23 पर प्रकाशित चित्र-5 को चित्र-6 के रूप में देखिए और चित्र-6 को चित्र-5 के रूप में देखिए।*

– सम्पादक मण्डल